अनुकूल भारत गैस वितरक के खिलाफ FIR, अवैध गैस गोदाम पर कार्रवाई डीसीपी विजयकांत सागर की सख्त पहल

हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

पेज 4 ● वर्ष : 16 ● अंक : 294 ● मुंबई, शुक्रवार, 11 जुलाई 2025 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

मुंबई शिक्षा विभाग में बड़ा भूचाल: उपसंचालक संदीप सांगवे निलंबित, 150 शिक्षकों के वेतन घोटाले की एसआईटी जांच शुरू

राष्ट्रीय स्वाभिमान। सुजीत मिश्रा

मुंबईःशालेय शिक्षण विभाग में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और शिक्षकों के वेतन में अनियमितताओं के आरोपों के चलते मुंबई के शिक्षण उपसंचालक संदीप सांगवे को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। शालेय शिक्षण मंत्री दादा भुसे ने विधानसभा में इस बात की घोषणा करते हुए बताया कि पूरे मामले की जांच एसआईटी (विशेष जांच दल) से कराई जाएगी और आठ दिन के भीतर रिपोर्ट सौंपने के आदेश दिए गए हैं।

यह कार्रवाई भाजपा विधायक संजय उपाध्याय द्वारा विधानसभा में लाए गए लक्षवेधी प्रस्ताव के बाद हुई, जिसमें सांगवे पर शालार्थ आईडी घोटाला, शिक्षकों के समायोजन में गड़बड़ी और 150 से अधिक शिक्षकों का वेतन हड़पने जैसे गंभीर आरोप लगाए गए। उपाध्याय ने दावा किया कि सांगवे ₹मैं सबका काम करवा दूंगा₹ कहकर अधिकारियों और विधायकों को प्रभावित करने की कोशिश करते थे और स्वयं को 'अजेय' समझते थे।

विधायक रणधीर सावरकर ने सदन में आरोप लगाया कि सांगवे विधानसभा के कुछ सदस्यों को प्रभावित करने के लिए 5 करोड़ रुपये की डील कर रहे थे। वहीं, उपाध्याय ने कहा कि सांगवे के एजेंटों ने उन्हें सदन में यह मामला न उठाने की धमकी दी थी।

विधानसभा में सर्वदलीय विधायकों ने सांगवे के निलंबन और कड़ी जांच की मांग की। मंत्री दादा भुसे ने आश्वासन दिया कि जांच निष्पक्ष और समयबद्ध होगी। उन्होंने कहा कि दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

सरकार की इस कार्रवाई के बावजूद विपक्ष ने असंतोष जताते हुए सदन में हंगामा किया। इसके बाद भुसे ने स्पष्ट किया कि सांगवे का निलंबन तत्काल प्रभाव से लागू किया गया है और एसआईटी जांच की रिपोर्ट 8 दिन के भीतर पेश की जाएगी।

यह मामला शिक्षा विभाग की साख और पारदर्शिता को लेकर गंभीर सवाल खड़ा करता है।

गणेशोत्सव को मिला राज्योत्सव का दर्जा, महाराष्ट्र सरकार का बड़ा ऐलान

महाराष्ट्र सरकार ने गणेश भक्तों को बड़ी सौगात दी है। अब से गणेशोत्सव को राजकीय उत्सव यानी राज्योत्सव का दर्जा मिलेगा। विधानसभा के मानसून सत्र में भाजपा विधायक हेमंत रासाने द्वारा प्रस्ताव रखा गया, जिस पर संस्कृति मंत्री आशीष शेलार ने घोषणा करते हुए कहा कि यह त्योहार अब पूरे राज्य में सरकारी स्तर पर मनाया जाएगा।

शेलार ने कहा कि कुछ वर्षों में गणेशोत्सव की सार्वजनिक परंपरा को बाधित करने की कोशिशें हुई थीं, लेकिन अब सरकार ने इन रुकावटों को हटाने का काम किया है। यह फैसला बप्पा के आगमन से ठीक पहले आया है, जब 27 अगस्त से गणपति उत्सव की शुरुआत हो रही है।

गौरतलब है कि 1893 में लोकमान्य तिलक ने इस उत्सव को सार्वजनिक रूप दिया था, जो आज महाराष्ट्र की संस्कृति और एकता का प्रतीक बन चुका है। अब इसे राजकीय दर्जा देकर सरकार ने परंपरा को नया सम्मान दिया है, जिसे सांस्कृतिक और राजनीतिक दोनों नजरिए से अहम माना जा रहा है।

वोटर लिस्ट रिवीजन पर सुप्रीम कोर्ट से नहीं मिली रोक, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने विपक्ष पर बोला हमला

बिहार। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) को लेकर विपक्ष के विरोध पर अब सियासी पारा चढ़ता जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने मतदाता सूची में संशोधन पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है, जिससे चुनाव आयोग को राहत मिली है और राज्य में चल रही प्रक्रिया जारी रहेगी। कोर्ट ने यह भी कहा कि आधार, वोटर आईडी और राशन कार्ड जैसे दस्तावेजों को सत्यापन प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। इस फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने विपक्ष, खासकर कांग्रेस और राजद को कटघरे में खड़ा कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि ये दल तुष्टिकरण की राजनीति कर रहे हैं और बिहार में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों को संरक्षण देना चाहते हैं। विजय सिन्हा ने कहा, ₹15-20% ऐसे अवैध घुसपैठियों ने बिहार को कलंकित किया है और कांग्रेस-राजद उनके पक्ष में खड़े हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। विजय सिन्हा ने यह भी कहा कि चुनाव आयोग पारदर्शिता से काम कर रहा है और सुप्रीम कोर्ट का फैसला संविधान और लोकतंत्र में उनके विश्वास को मजबूत करता है। वहीं, कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने कोर्ट के रुख को लोकतंत्र के लिए राहत बताया है। अब इस मामले की अगली सुनवाई 28 जुलाई को होगी। इससे पहले कोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा है कि दस्तावेज आधारित सत्यापन को मतदाता सूची संशोधन में प्राथमिकता दी जाए। इस बीच, बिहार की राजनीति में यह मुद्दा चुनावी रणनीति और आरोप-प्रत्यारोप का केंद्र बनता जा रहा है।

दिल्ली में मानसून की बारिश से आफत, सड़कों पर जलजमाव और जाम, कई इलाकों में बिजली गुल

नई दिल्ली। गुरुवार सुबह दिल्लीवासियों की शुरुआत मानसून की भारी बारिश के साथ हुई, जिसने राजधानी के कई हिस्सों में जीवन की रफ्तार थाम दी। सड़कों पर जलभराव के चलते जगह-जगह लंबा ट्रैफिक जाम लग गया, जिससे दफ्तर और स्कूल जाने वाले लोग बुरी तरह प्रभावित हुए। बारिश इतनी तेज़ रही कि कुछ इलाकों में बिजली की आपूर्ति भी बाधित हो गई। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने बताया कि दिल्ली का न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया, जो सामान्य से 4.3 डिग्री कम है। सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता का स्तर 100 प्रतिशत तक पहुंच गया। मौसम विभाग ने दिनभर बादल छाए रहने और मध्यम बारिश की संभावना जताई है, जबकि अधिकतम तापमान 35.6 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। बारिश के कारण यातायात का बुरा हाल रहा। कई प्रमुख मार्गों पर वाहन रेंगते दिखे, जबकि निचले इलाकों में पानी भर जाने से आवाजाही पूरी तरह से ठप हो गई।

कश्मीर अगर स्वर्ग, तो अब बंगाल से तुलना क्यों? ममता से मुलाकात के बाद उमर अब्दुल्ला ने बीजेपी पर लगाया तंज

कोलकाताः जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से कोलकाता के नबान्न में भेंट की। दोनों नेताओं ने मुलाकात के बाद मीडिया से बातचीत की, जिसमें उमर अब्दुल्ला ने बीजेपी के उस दावे पर कटाक्ष किया, जिसमें बंगाल की तुलना कश्मीर से की जा रही है।

उमर अब्दुल्ला ने कहा, बीजेपी दावा करती है कि 2018 से 2024 तक कश्मीर को स्वर्ग बना दिया गया है। अगर कश्मीर सचमुच स्वर्ग है और बंगाल की तुलना उससे की जा रही है, तो यह अच्छी बात है। लेकिन अगर वे कहते हैं कि कश्मीर नरक बन गया है, तो बीजेपी को कश्मीरियों से माफी मांगनी चाहिए। और मैं तो यहाँ दस महीने पहले आया हूँ, उससे पहले तो बीजेपी की ही सरकार थी।

ममता बनर्जी ने कहा कि पहलगाम हमले के बाद उनकी सरकार ने पूंछ और राजौरी में प्रभावित परिवारों की मदद के लिए टीम भेजी थी। उमर अब्दुल्ला ने ममता के इस कदम की प्रशंसा की और उन्हें कश्मीर आने का आमंत्रण दिया। ममता ने कहा, दुर्गा पूजा के बाद मैं कश्मीर जाने की कोशिश करूंगी। बंगाल के लोग निडर होकर कश्मीर घूमने जाएं। उन्होंने केंद्र सरकार से सीमा सुरक्षा और पर्यटन को बढ़ावा देने की मांग भी की।

ममता ने कश्मीर की कला, संगीत, मसाले और ड्राई फ्रूट्स की तारीफ की और बंगाल तथा कश्मीर के बीच पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए समझौता ज्ञापन (MoU) की बात की। उन्होंने टॉलीवुड को कश्मीर में फिल्म शूटिंग के लिए भेजने और कश्मीरी कलाकारों को बंगाल के दुर्गा पूजा व गणतंत्र दिवस समारोह में आमंत्रित करने की भी योजना साझा की। उमर अब्दुल्ला ने कहा, बंगाल के पर्यटकों की सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। हम व्यापार, पर्यटन और आपसीममता बनर्जी ने पहलगाम हमले की कड़ी निंदा करते हुए केंद्र सरकार पर हमलावरों को पकड़ने में असफल रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, ₹सीमा सुरक्षा केंद्र की जिम्मेदारी है। यदि जरूरत पड़ी तो केंद्र को उमर अब्दुल्ला से बात कर कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए।

बीजेपी की बंगाल को 'कश्मीर' बताने की रणनीति पर उमर अब्दुल्ला के तंज ने सियासी गलियारों में हलचल मचा दी है। दोनों नेताओं की यह मुलाकात विपक्षी एकता और क्षेत्रीय सहयोग के प्रतीक के रूप में देखी जा रही है। उमर अब्दुल्ला ने शाम 6 बजे ताज बंगाल में प्रेस कॉन्फ्रेंस में इन मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की।

कनाडा में कपिल शर्मा के कैफे पर फायरिंग, खालिस्तानी आतंकी ने ली जिम्मेदारी

नई दिल्लीः मशहूर कॉमेडियन कपिल शर्मा और उनकी पत्नी गिन्नी चतरथ के लिए दुखद खबर सामने आई है। दो साल की मेहनत के बाद कपिल और गिन्नी ने कनाडा में अपना बिजनेस शुरू किया था, जिसका नाम 'कैप्स कैफे' रखा गया था। इस कैफे को लोगों का अच्छा रिस्पॉन्स मिला था और यहां कॉफी व खाने का आनंद लेने के लिए अच्छी संख्या में लोग आ रहे थे। लेकिन अब खबर आई है कि कैफे खुलने के कुछ ही दिनों बाद वहां फायरिंग की घटना हुई। कनाडा में कपिल शर्मा के कैफे वाली बिल्डिंग पर कुछ अज्ञात हमलावरों ने हमला किया और कई राउंड फायरिंग की। हमलावर गाड़ी से आए थे और फायरिंग के बाद वहां से फरार हो गए। हालांकि, इस घटना में किसी के घायल होने की खबर नहीं है।

फायरिंग की जिम्मेदारी खालिस्तानी आतंकी हरजीत सिंह लड्डी ने ली है। लड्डी भारत की एनआईए का मोस्ट वांटेड आतंकवादी है और वह बब्बर खालसा इंटरनेशनल (BKI) से जुड़ा हुआ है। सूत्रों के मुताबिक, लड्डी ने कपिल शर्मा के किसी पुराने बयान को लेकर यह हमला करने की बात कही है। पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर मौजूद हैं और मामले की जांच कर रही हैं। कपिल और गिन्नी के कैफे को निशाना बनाने वाले हमले की वजह अभी स्पष्ट नहीं हो सकी है। कपिल शर्मा और गिन्नी की तरफ से इस मामले में अब तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, यह भी पता नहीं चल पाया है कि फायरिंग का मकसद कपिल शर्मा के रेस्तरां को नुकसान पहुंचाना है या कपिल को धमकाना।

गिन्नी चतरथ सोशल मीडिया पर कम सक्रिय रहती हैं, लेकिन कैफे के खुलने के बाद उन्होंने फैन्स और दोस्तों का धन्यवाद करते हुए उनकी प्रतिक्रियाएं साझा की थीं। उन्होंने बताया था कि पिछले दो साल से वे इस रेस्तरां के लिए कड़ी मेहनत कर रही थीं। गिन्नी ने कहा था कि उनके कई आइडियाज को अब सफलता मिली है, और कैफे को मिले पॉजिटिव रिव्यू देखकर वह बेहद खुश हैं। वहीं, कपिल शर्मा अपने लोकप्रिय कॉमेडी शो 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' की शूटिंग में व्यस्त हैं। आने वाले एपिसोड में 'पंचायत' के जीतू भैया और उनके दोस्तों की एंट्री होगी।

लूट की शिकायत करने गए क्लर्क को पुलिस ने पीटा, वायरल वीडियो में थानेदार ने मांगी माफी

मुजफ्फरपुर । बिहार पुलिस की कार्यशैली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। मुजफ्फरपुर जिले के रामपुर हरि थाना में एक कॉलेज क्लर्क को लूट की शिकायत दर्ज कराने पर कथित रूप से बेरहमी से पीटा गया, जिसके बाद पीड़ित को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। मामले का वीडियो सामने आने के बाद हड़कंप मच गया है।

विशुनदेव नारायण सिंह इंटर कॉलेज में क्लर्क के पद पर कार्यरत विशाल कुमार 8 जुलाई को 2.11 लाख जमा करने बैंक जा रहे थे। रास्ते में बाइक सवार बदमाशों ने पिस्तौल की नोक पर यह रकम लूट ली। जब विशाल घटना की रिपोर्ट दर्ज कराने रामपुर हरि थाना पहुंचे, तो थानेदार सुजीत मिश्रा ने न केवल शिकायत दर्ज करने से इनकार किया, बल्कि उन्हें लूट में संलिप्त मानते हुए एक बंद कमरे में पीटना शुरू कर दिया।विशाल का आरोप है कि थानेदार ने उन्हें धमकाया और कहा कबूल करो कि लूट तुमने खुद करवाई है, नहीं तो एनकाउंटर कर देंगे।

जब विशाल ने बात नहीं मानी, तो उन्हें एक कमरे में बंद कर कथित तौर पर 100 से अधिक बार लाठी से पीटा गया। रात करीब 10:30 बजे उन्हें चुपचाप थाने से भगा दिया गया। हालत बिगड़ने पर परिजनों ने उन्हें सदर अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उनका इलाज जारी है।

घटना के बाद जब मामला मीडिया में उछला और वीडियो वायरल हुआ, तो थानाध्यक्ष खुद बुधवार रात अस्पताल पहुंचे और पीड़ित से माफी मांगते नजर आए। वीडियो में वे कान पकड़ते हुए कहते हैं हमको भी डंडे मार दीजिए, केस दर्ज हो गया है, अब आप माफ कर दीजिए। मामले पर ग्रामीण एसपी राजेश सिंह प्रभाकर ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जांच के आदेश एएसपी को दिए गए हैं, और रिपोर्ट के आधार पर उचित कार्रवाई की जाएगी। पीड़ित विशाल ने राज्य व राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में शिकायत भी दर्ज कराई है।विशाल के पिता ने मीडिया से बातचीत में न्याय की गुहार लगाई और भावुक होते हुए कहा लड़का तो लूटा ही गया, अब पुलिस ने मार-मार कर उसे अधमरा कर दिया। क्या न्याय मांगना भी गुनाह है?

स्टेट लेवल टेनिस खिलाड़ी की पिता ने की हत्या, बेटी के रील बनाने से था नाराज

गुरुग्राम। गुरुग्राम के सेक्टर 57 से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है, जहां स्टेट लेवल टेनिस खिलाड़ी राधिका यादव की उसके ही पिता ने गोली मारकर हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा और मामले की जांच शुरू की।

पुलिस के मुताबिक, वारदात गुरुवार दोपहर करीब 12 बजे सेक्टर 57 के एक मकान में हुई, जहां राधिका अपने परिवार के साथ रहती थी। परिवार में उस समय आपसी विवाद हुआ, जिसके बाद पिता ने गुस्से में आकर राधिका पर एक के बाद एक तीन गोलियां चला दीं।

गोलियां लगने के बाद 25 वर्षीय राधिका को गंभीर हालत में एक निजी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे बचा नहीं सके। राधिका यादव स्टेट लेवल की जानी-मानी टेनिस खिलाड़ी थीं और उन्होंने कई प्रतियोगिताओं में मेडल जीतकर परिवार और इलाके का नाम रोशन किया था।

वारदात की सूचना मिलते ही गुरुग्राम पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी पिता को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उस रिवॉल्वर को भी बरामद कर लिया जिससे हत्या की गई थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है और हत्या के पीछे की वजह जानने की कोशिश कर रही है।

जेल में बंद इमरान खान के लिए आंदोलन नहीं कर पाएंगे बेटे कासिम और सुलेमान, सरकार ने फंसा दिए 4 कानूनी पेच

कराची। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने 5 अगस्त 2025 को शहबाज शरीफ और सेना प्रमुख असीम मुनीर के खिलाफ अब तक के सबसे बड़े आंदोलन का ऐलान किया है। इस आंदोलन में उनके लंदन में रहने वाले दोनों बेटे—कासिम और सुलेमान—भी शामिल होने वाले थे, लेकिन पाकिस्तान सरकार ने इस पर कानूनी अड़चनें खड़ी कर दी हैं। यदि ये पेच नहीं सुलझते, तो इमरान के बेटे इस आंदोलन में भाग नहीं ले पाएंगे। कासिम और सुलेमान, इमरान खान और उनकी पूर्व पत्नी रेहम खान के बेटे हैं। दोनों ब्रिटिश नागरिक हैं और लंबे समय से लंदन में रह रहे हैं। पाकिस्तान का कानून विदेशी नागरिकों को देश में राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं देता। इसी आधार पर सरकार ने उनकी संभावित भागीदारी पर सवाल खड़े किए हैं। कानून मंत्री अकील मलिक के अनुसार, पाकिस्तान में अनुच्छेद-16 के तहत प्रदर्शन का अधिकार केवल पाकिस्तानी नागरिकों को है। विदेशी नागरिक, चाहे वे किसी भी उद्देश्य से आए हों, प्रदर्शन नहीं कर सकते।

पीएमएल-एन सांसद इरफान सिद्दीकी का दावा है कि कासिम और सुलेमान ने वीजा आवेदन में यह नहीं बताया कि वे आंदोलन में भाग लेने के लिए आ रहे हैं। गृह मंत्रालय इस आधार पर उनके वीजा को खारिज कर सकता है।

सरकार को इस बात की चिंता है कि आंदोलन में हिंसा हो सकती है। चूंकि दोनों बेटे यह गारंटी नहीं दे सकते कि प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहेगा, ऐसे में उनकी उपस्थिति को खतरा माना जा रहा है। पाकिस्तान के सुरक्षा नियमों के तहत किसी भी विदेशी नागरिक को देश की आंतरिक राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाती, खासकर यदि मामला सरकार विरोधी आंदोलन का हो।

इमरान खान पिछले 23 महीनों से रावलपिंडी की अडियाला जेल में बंद हैं। उन पर भ्रष्टाचार और हिंसा भड़काने जैसे गंभीर आरोप हैं। उनकी पत्नी बुशरा बीबी भी जेल में हैं। इमरान की बहन अलिमा खान के अनुसार, कासिम और सुलेमान अब अमेरिका जाकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने पिता की रिहाई की मुहिम चलाएंगे। हाल ही में दोनों बेटों ने एक वीडियो संदेश जारी कर पाकिस्तान सरकार की नीतियों की आलोचना की थी और अपने पिता की रिहाई के लिए वैश्विक समर्थन की अपील की थी।

'उदयपुर फाइल्स' पर हाईकोर्ट की रोक, जमीयत को आवेदन की छूट, सरकार से एक हफ्ते में जवाब मांगा

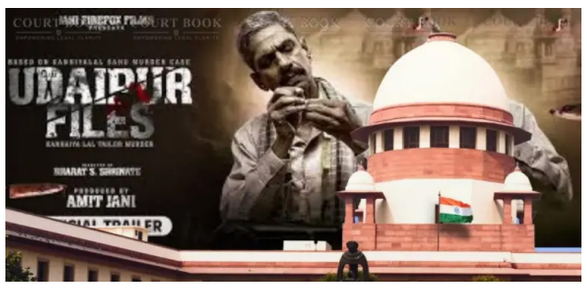

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने 11 जुलाई को रिलीज़ होने वाली विवादित फिल्म 'उदयपुर फाइल्स' पर अंतरिम रोक लगा दी है। यह फिल्म साल 2022 में उदयपुर में दर्ज़ी कन्हैयालाल की दिनदहाड़े हत्या की घटना पर आधारित है। कोर्ट ने फिल्म के खिलाफ याचिका दाखिल करने वाली जमीयत उलेमा-ए-हिंद को केंद्र सरकार के पास सिनेमैटोग्राफ अधिनियम की धारा 6 के तहत आवेदन दाखिल करने की सलाह दी है।

हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता को आवेदन देने के लिए दो दिन का समय दिया है और सरकार से कहा है कि एक सप्ताह के भीतर उस पर निर्णय लिया जाए।

'उदयपुर फाइल्स' में कन्हैयालाल हत्याकांड के आरोपियों मोहम्मद रियाज अटारी और गौस मोहम्मद को दिखाया गया है, जिन्होंने धार्मिक कट्टरता के चलते कन्हैयालाल की हत्या कर दी थी। फिल्म में नूपुर शर्मा के बयान और उसके बाद उपजे विवाद को भी शामिल किया गया है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद का आरोप है कि यह फिल्म धार्मिक भावनाओं को भड़काती है और मुस्लिम समुदाय, खासकर दारुल उलूम देवबंद और जमीयत को गलत तरीके से निशाना बनाती है। इसके चलते समाज में तनाव और अस्थिरता फैल सकती है। फिल्म को लेकर महाराष्ट्र के हज़रत ख्वाजा गरीब नवाज वेलफेयर संगठन ने भी आपत्ति जताई थी और राज्य के 20 से अधिक सिनेमाघरों को पत्र भेजकर चेतावनी दी थी कि फिल्म को दिखाया गया तो "कड़ा कदम" उठाया जाएगा। फिल्म के निर्माता अमित जानी ने इन धमकियों को लेकर तीखी प्रतिक्रिया दी थी। उन्होंने कहा कि फिल्म को सेंसर बोर्ड से सर्टिफिकेट मिला है, इसलिए किसी को प्रदर्शन पर रोक लगाने का अधिकार नहीं है। सिनेमाघरों को डराने की बजाय, यदि किसी संगठन को आपत्ति है, तो उन्हें कोर्ट में निर्माता और सेंसर बोर्ड को पक्ष बनाना चाहिए। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार और पुलिस से मांग की थी कि फिल्म के खिलाफ दबाव बनाने और धमकी देने वालों पर कानूनी कार्रवाई की जाए। दिल्ली हाईकोर्ट के निर्देश के मुताबिक जमीयत दो दिनों में केंद्र सरकार को आवेदन देगा। सरकार को उस पर एक सप्ताह के भीतर फैसला लेना होगा।तब तक फिल्म की रिलीज पर अस्थायी रोक बनी रहेगी।

संपादकीय

विभाजित परिदृश्य में भारत की संयमपूर्ण नीति

बढ़ते तनावों और पीछे हटती सच्चाइयों के युग में, भारत अपने शांत विमर्श के साथ, अपनी आज़ादी के 80 वर्ष पूरे करने जा रहा है। हमारी यात्रा एक ऐसा वृत्तांत रही है, जिसे फिर से बताने की ज़रूरत है – भले ही अपनी सौवीं वर्षगांठ की परिकल्पना, शक्ति का विस्तार करने में नहीं, बल्कि अपने उद्देश्यों को और गहराई देने में है।

जहां अन्य राष्ट्रों में प्रभुत्व बनाने के लिए होड़ मची है, भारत अपनी राह पर कायम है- विचारधारा में धंसा हुआ नहीं, बल्कि सभ्यतागत नैतिकता की गहरी जड़ों से जुड़ा, जिसे हम 'युमैनशिप' अर्थात धर्मनीति के नाम से जानते हैं- सतत राष्ट्रीय आचार संहिता, स्मृति द्वारा आकार पाई, समदृष्टि सहित और मूलतः संयम वाली। यह कोई जुमला नहीं; हमारा वह व्यवहार है, जिसे हम तब भी कायम रखते हैं जब कोई न देख रहा हो और कैसे हम सबके सामने होने के बावजूद खुद को रोक लेते हैं। यह नैतिकता हमने अपने सबसे प्राचीन शब्दकोष से पाई है। दुनिया युद्ध और इसकी चेतावनियों के बीच डगमगा रही है। गाजा खून में सना है; यूक्रेन बिखरने की कगार पर है; ईरान और इस्राइल अपने संयम की सीमाएं नाप रहे हैं। व्यापार बल-प्रयोग का औजार बन गया है। जलवायु परिवर्तन के खतरे को हथियार बनाया जा रहा है। तकनीक उपकरण और ख़तरा, दोनों बन गई है। परमाणु संयम, लापरवाही भरी बयानबाज़ी में बदल गया है। संयुक्त राष्ट्र पंगु हुआ पड़ा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा समिति के स्थाई सदस्य देश तभी कार्रवाई करते हैं, जब उनके हित आपस में मिलें। संतुलन का भरोसा देने वाले तंत्र को साजिशन मामलों से अलग रखा जा रहा है।

1948 से 2025 तक, हमारे विकल्प सतत कहानी बताते हैं। हम लाहौर की दहलीज़ पर जाकर थम गए, जीता हुआ हाजी पीर इलाका लौटा दिया, और पाकिस्तानी सेना को दूर तक खदेड़ने के बावजूद मुज़फ़्फ़राबाद पर कब्ज़ा नहीं किया। सीमा पार किए बिना कारगिल पर फिर से कब्ज़ा कर लिया। हमने ढाका को आज़ाद करवाया और बाद में उन 90,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों को स्वदेश भेजा, जिनके साथ जिनेवा संधि के तहत उदारतापूर्ण व्यवहार किया गया। मदद की पुकार पर हम मालदीव और श्रीलंका गए। परमाणु मामलों में, कगार की नौबत बनाए बिना नो फर्स्ट यूज़ सिद्धांत का पालन करते आए हैं। हर मामले में, भारत के पास आगे बढ़ने की पूरी कूवत थी, लेकिन समदृष्टि को न तजने का उसका इरादा ज़्यादा मज़बूत रहा। जहां दूसरे बीच रास्ते में पीछे हट गए,वहीं भारत स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ अंत तक गया।1962 में, हिंदी-चीनी भाई-भाई का दोस्ताना उस वक्त जोर-ज़बरदस्ती में बदल गया जब चीन, जो खुद प्राचीन सभ्यता है और जिसके साथ हम शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व चाहते थे, उसने वार्ता की बजाय धोखा चुना। युद्ध त्वरित रहा। जब धूल छंटी, तो एक सवाल ज़रूर उठा : चीन ने अपनी शिष्टता तज क्या पाया और सह-अस्तित्व की नैतिकता त्यागकर क्या खोया? भरोसा टूट गया। लॉर्ड कर्जन ने 1907 में ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में 'फ्रंटियर्स' नामक सालाना व्याख्यान में कहा था : 'सहमति वाली स्पष्ट सीमारेखा की बजाय असहमति वाली सीमाओं से ज़्यादा हासिल किया जा सकता है'। एक सदी बाद, लगता है कि चीन ने वह सिद्धांत आत्मसात कर लिया। आज, भारत के संयम की परीक्षा और दिखाए गए दृढ़ संकल्प के प्रदर्शन के साथ, चीन को खुद सामने आते नहीं पा रहे, बल्कि वह खेल कर रहा है – खुद पीछे रहकर किसी और से जोर-ज़बरदस्ती करवाने वाले की भूमिका में। इस नाटक का पर्दाफाश करने में ऑपरेशन सिंदूर पहला उदाहरण रहा। यह चीन और उसका मुखौटा बने पाकिस्तान के लिए एक संदेश भी था : जहां भारत तनाव को विस्तार देने के उनके खेल में नहीं फंसने वाला है वहीं पीछे भी नहीं हटेगा। हाथी सब याद रखता है। और याददाश्त की बदौलत, वह उकसावे से नहीं, संतुलन के के साथ नपी-तुली कार्रवाई करता है। भारत का उदय, अपने हित कायम रखने की एवज में सहयोगियों की बलि देने वाली पामर्स्टन नीति पर चलकर नहीं हुआ है। इसने रिश्तों में दबाव बनाने की बजाय इनको सतत बनाए रखने को तरजीह दी। ऐसे युग में जब पूर्व-निवारण उपाय करना तमाशा बन चुका है और गठजोड़ लेन-देन आधारित बन गए हैं, भारत फिर भी संतुलन बनाए रखने का पक्षधर है – इसलिए नहीं कि यह आसान है, बल्कि इसलिए कि यह सही है।

17 देशों की संसदों में संबोधन, 27 देशों से सर्वोच्च सम्मान, विश्व मंच पर मोदी का जादू बरकरार

> प्रधानमंत्री मोदी का संसदों में संबोधन केवल भाषण नहीं, बल्कि रणनीतिक कूटनीति का हिस्सा है। उन्होंने विकसित और विकासशील देशों, दोनों के विधायी मंचों पर भारत की लोकतांत्रिक विरासत, आर्थिक दृष्टि और वैश्विक सहयोग की भावना को साझा किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और वैश्विक नेतृत्व के क्षेत्र में भारत को एक नई ऊँचाई पर पहुंचा दिया है। जहां एक ओर उन्होंने अब तक 17 देशों की संसदों को संबोधित कर भारत की आवाज़ को विश्वमंच पर मुखर किया है, वहीं दूसरी ओर 27 देशों से प्राप्त सर्वोच्च नागरिक सम्मानों ने उन्हें दुनिया के सबसे सम्मानित और प्रभावशाली नेताओं में स्थान दिला दिया है। यह उपलब्धियाँ केवल व्यक्तिगत सम्मान नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक स्थिति की उन्नति का प्रतिबिंब हैं। प्रधानमंत्री मोदी का संसदों में संबोधन केवल भाषण नहीं, बल्कि रणनीतिक कूटनीति का हिस्सा है। उन्होंने विकसित और विकासशील देशों, दोनों के विधायी मंचों पर भारत की लोकतांत्रिक विरासत, आर्थिक दृष्टि और वैश्विक सहयोग की भावना को साझा किया। मोदी की ओर से अन्य देशों की संसदों में दिये गये संबोधन को याद करें तो उन्होंने 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद ऑस्ट्रेलिया, फिजी, भूटान, नेपाल की संसदों को संबोधित किया। साल 2015 में प्रधानमंत्री ने ब्रिटेन, श्रीलंका, मंगोलिया, अफगानिस्तान और मॉरीशस की संसद को संबोधित किया। साल 2016 में उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया। 2018 में प्रधानमंत्री ने युगांडा और 2019 में मालदीव की संसद में अपना संबोधन दिया। 2023 में प्रधानमंत्री मोदी ने दूसरी बार अमेरिकी कांग्रेस में अपना संबोधन दिया और इसके साथ ही वह उन कुछ चुनिंदा वैश्विक हस्तियों में शुमार हो गये जिन्हें दो बार अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करने का गौरव हासिल हुआ है। इसके बाद प्रधानमंत्री ने 2024 में गुयाना और 2025 में घाना, त्रिनिदाद और टोबैगो तथा नामीबिया की संसद को संबोधित किया। खास बात यह है कि 2025 में तीन देशों की संसदों में प्रधानमंत्री का संबोधन एक सप्ताह के भीतर हुआ है जोकि अपने आप में एक और कीर्तिमान है। इन सभी संबोधनों में भारत ने ग्लोबल साउथ, संयुक्त राष्ट्र सुधार, आतंकवाद विरोध, जलवायु न्याय और डिजिटल समावेशन जैसे मुद्दों पर स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

इसके अलावा, प्रधानमंत्री को 27 देशों से मिले सर्वोच्च सम्मान पर गौर करें तो आपको बता दें कि उन्हें यूएई का ₹Order of Zayed₹, रूस का ₹Order of St. Andrew₹, अमेरिका का ₹Legion of Merit₹, फ्रांस का ₹Grand Cross of the Legion of Honour₹, सऊदी अरब का ₹King Abdulaziz Sash₹, बांग्लादेश का ₹Liberation War Honour₹ समेत अफ्रीकी और कैरिबियाई देशों से राष्ट्रीय सम्मान मिले हैं। यह दर्शाता है कि भारत की सॉफ्ट पावर, अर्थव्यवस्था, लोकतंत्र और रणनीतिक संतुलनकारी भूमिका को विश्व स्वीकार कर रहा है। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति पारंपरिक 'गुटनिरपेक्षता' से आगे जाकर ₹बहुध्रुवीय मित्रता₹ पर आधारित है। उन्होंने पश्चिमी शक्तियों से रिश्ते गहरे किए, लेकिन साथ ही अफ्रीका, मध्य एशिया, खाड़ी देशों और दक्षिण अमेरिका में नए रणनीतिक संबंध भी बनाए। मोदी की यह अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि भारत की उभरती शक्ति, विचारधारा और नेतृत्व क्षमता की स्वीकार्यता है। उनका हर संसद में दिया गया संबोधन, हर प्राप्त सम्मान, भारत की लोकतांत्रिक आत्मा, विकासशील दृष्टिकोण और नैतिक शक्ति का प्रतीक है। साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 17 देशों की संसदों को संबोधित करना और 27 देशों से सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करना, भारतीय विदेश नीति के इतिहास में एक अभूतपूर्व अध्याय है। यह दर्शाता है कि आज का भारत केवल सुनने वाला नहीं, बल्कि दुनिया को दिशा देने वाला देश बन चुका है। यह उपलब्धि भारतवासियों के आत्मविश्वास, आकांक्षाओं और अंतरराष्ट्रीय भूमिका को सशक्त करती है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विश्व दौरों की चर्चा प्रायः उनकी रणनीतिक कूटनीति, वैश्विक नेतृत्व और द्विपक्षीय समझौतों के संदर्भ में होती है, किंतु इन यात्राओं में एक और विशेष पक्ष होता है जो चुपचाप भारत की आत्मा को विश्व के सामने प्रस्तुत करता है— वह है उनके द्वारा चयनित सांस्कृतिक उपहार। हम आपको बता दें कि हर दौरे में प्रधानमंत्री मोदी जिन विशिष्ट हस्तशिल्पों, कलाकृतियों और प्रतीकों को उपहार स्वरूप ले जाते हैं, वे केवल शिष्टाचार नहीं, बल्कि भारत की समृद्ध परंपरा, बहुरंगी संस्कृति और आत्मनिर्भर कलात्मकता का परिचायक होते हैं। यह सांस्कृतिक कूटनीति भारत की सॉफ्ट पावर को सशक्त करने में निर्णायक भूमिका निभा रही है। हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी जिन वस्तुओं को विदेशी राष्ट्राध्यक्षों को भेंट करते हैं, वे भारत के अलग-अलग राज्यों, जनजातियों, परंपराओं और शिल्प कलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रधानमंत्री मोदी के उपहार केवल भारत की कलाओं का प्रदर्शन नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम भी हैं। प्रधानमंत्री के उपहार दर्शाते हैं कि भारत केवल तकनीक और व्यापार का केंद्र नहीं, बल्कि हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता का जीवंत प्रतिनिधि है। इन उपहारों के चर्चित होने से संबंधित हस्तशिल्प की मांग और मूल्य दोनों बढ़ते हैं। इसके अलावा, 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' की नीतियों को सांस्कृतिक स्तर पर मजबूती मिलती है।

इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब भी किसी देश की यात्रा पर जाते हैं, तो उनकी पहली प्राथमिकता होती है— वहाँ बसे भारतीय समुदाय से संवाद। यह मुलाकातें केवल भावनात्मक संबंधों का प्रदर्शन नहीं बल्कि नागरिक जुड़ाव का शक्तिशाली प्रतीक बन चुकी हैं। प्रवासी भारतीयों द्वारा अपने सांस्कृतिक प्रदर्शन, लोककला, संगीत और पारंपरिक वेशभूषा के माध्यम से जो दृश्य निर्मित होता है, वह विश्व के सामने भारत की एकता में विविधता और सजीव परंपरा का संदेश देता है।

प्रधानमंत्री मोदी जब इन समुदायों से मिलते हैं, तो वह यह स्पष्ट करते हैं कि वे भारत के गौरव के वाहक हैं, वे भारत और दुनिया के बीच सांस्कृतिक पुल हैं और वे भारत की सॉफ्ट पावर के सशक्त स्रोत हैं। प्रधानमंत्री मोदी की प्रत्येक विदेश यात्रा में भारतीय समुदाय द्वारा प्रस्तुत नृत्य, संगीत, भजन, पारंपरिक वेशभूषा में स्वागत, भाषणों में भारत माता की जय घोष, आदि केवल रस्म अदायगी नहीं होती, बल्कि ये दिखाते हैं कि भारत कहीं भी जाए, अपनी संस्कृति को जीवंत रखता है, भारत की परंपरा आधुनिकता के साथ सह-अस्तित्व में है और भारत की 'संवेदनशीलता' और 'संपर्क' की नीति भावनात्मक संबंधों पर आधारित है।

सरोकार

मनुष्य का दुखः तृष्णा की थाली में परोसा ज़हर

एक बार की बात है। कुछ जिज्ञासु शिष्यों ने अपने गुरु से एक बहुत ही सरल पर अत्यंत गहन प्रश्न किया—"गुरुदेव, यह बताइये कि मनुष्य हमेशा दुखी क्यों रहता है? उसके पास घर है, परिवार है, सुविधाएं हैं, फिर भी वह भीतर से अशांत क्यों है? दुख उसका पीछा क्यों नहीं छोड़ता?"

संत मुस्कराए। उनकी आँखों में वह गहराई थी जो किताबों में नहीं मिलती। उन्होंने कोई तर्क नहीं दिया, कोई शास्त्र नहीं सुनाया, बस एक प्रसंग सुनाया, एक कहानी जो जीवन का आईना बन गई। उन्होंने कहा—"एक व्यापारी था जो अपने ट्रक में चावल के बोरे भरकर ले जा रहा था। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था। अचानक झटका लगा और एक बोरा ट्रक से नीचे गिर गया, पर व्यापारी को इसका पता नहीं चला। वह आगे बढ़ गया।"

"थोड़ी देर बाद उस रास्ते से कुछ चींटियाँ निकलीं। उन्हें चावल की खुशबू मिली। वे बोरे के पास पहुँचीं और जितना उठा सकती थीं, कुछ दाने लेकर चली गयीं। उनके लिए यही बहुत था। फिर

कुछ चूहे आये, उन्होंने भी थोड़ी मात्रा में चावल खाया और अपनी बिलों में चले गये। फिर पक्षी आये, उन्होंने चोंच भरकर दाने लिए और आकाश की ओर उड़ गये। कुछ समय बाद वहाँ कुछ गायें पहुँचीं, उन्हें भोजन की गंध मिली, उन्होंने कुछ किलो चावल खा लिया और आगे बढ़ गयीं।"

"लेकिन कुछ देर बाद एक मनुष्य उधर से गुजरा। उसने चावल का बोरा देखा। उसके मन में विचार आया—'वाह! इतना सारा चावल? क्यों न मैं पूरा बोरा ही ले जाऊं।' और वह बोरा अपने सिर पर उठाकर चला गया। न उसे यह सोचना था कि ज़रूरत कितनी है, न यह कि वह बोरा किसी और का है। उसे सिर्फ यह दिखा कि वह अपने पास एक बोरा और जोड़ सकता है। बस यही लालच, यही तृष्णा उसे बोरे तक ले गयी।"संत ने शिष्यों की ओर गहरी दृष्टि से देखते हुए कहा—"अब बताओ, बाकी सब जीवों ने भी उसी बोरे से लिया था, पर वे सुखी थे, शांत थे। लेकिन मनुष्य—जिसके पास पहले से सब कुछ था—उसने पूरा बोरा उठाकर ले लिया। क्यों? क्योंकि उसे भूख नहीं थी, उसे तृष्णा थी। और यही तृष्णा मनुष्य के दुख का मूल कारण है।"

फिर संत ने कहा—"इस संसार के अधिकतर जीव केवल पेट भरने के लिए जीते हैं। उनकी ज़रूरत सीमित होती है। लेकिन मनुष्य का जीवन केवल पेट तक सीमित नहीं है, उसकी इच्छाएँ पेट से शुरू होकर अंतहीन होती जाती हैं। उसे एक चीज़ मिलती है तो दूसरी चाहिए। दूसरी मिलती है तो तीसरी की चाह जगती है। उसकी तृष्णा कभी नहीं रुकती, और यही असंतोष उसे लगातार दुख की आग में झोंकता रहता है।"

उन्होंने आगे कहा—"जिस दिन मनुष्य समझ जाएगा कि आवश्यकता के बाद इच्छा को रोकना ज़रूरी है, उसी दिन से उसका दुख कम होने लगेगा। तृष्णा वह कुआँ है जिसकी तली नहीं है—तुम उसमें जितना भी भरो, वह कभी नहीं भरता।"

गुरु की वाणी शिष्यों के हृदय में उतर चुकी थी। वे मौन थे, लेकिन उनके भीतर कुछ जाग गया था—संतोष का बीज।

जीवन को सार्थक बनाते हैं गुरू

गुरु बिन ज्ञान न उपजै गुरु बिन मिलै न मोक्ष, गुरु बिन लखै न सत्य को गुरु बिन मिटै न दोष। अर्थात गुरु के बिना ज्ञान नहीं आता और न ही मोक्ष मिल सकता है। गुरु के बिना सत्य की प्राप्ति नहीं होती और ना ही दोष मिट पाते हैं। यानी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को संवारने के लिए गुरू का होना बहुत ही आवश्यक है। भारतीय संस्कृति को धारण करने वाला व्यक्ति प्रेरणापुंज की तरह ही होता है। उनके प्रत्येक शब्द सकारात्मक दिशा का बोध कराने वाला होता है। हम प्रायः सुनते हैं कि हमारा देश विश्व गुरु रहा है, विश्व गुरु यानी सम्पूर्ण क्षेत्रों में विश्व का मार्ग दर्शन करने वाला, लेकिन क्या हमने सोचा है कि भारत का वह कौन सा गुण था, जिसके कारण विश्व के अंदर भारतीय प्रतिभा और क्षमता का बोलबाला था। इसका उत्तर आज भले ही कोई नहीं जानता हो, लेकिन यथार्थ यही है कि इसके पीछे मात्र भारतीय गुरुकुल ही थे। भारतीय संस्कृति में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें बालक के सम्पूर्ण विकास की अवधारणा और संरचना होती है। उस समय के हिसाब से गुरुकुलों में विश्व की सबसे श्रेष्ठ शिक्षा दी जाती थी। छात्रों का समग्र विकास किया जाता था। चाहे वह ज्ञान, विज्ञान का क्षेत्र हो या शारीरिक शिक्षा की बात हो या फिर नैतिक और व्यावहारिक संस्कारों की ही बात हो। गुरुकुल की शिक्षा बहुमुखी प्रतिभा का विकास करती थी। आज देश में कई गुरुकुल चल रहे हैं, उसमें बहुत आश्चर्यजनक प्रतिभा संपन्न बालकों का निर्माण भी हो रहा है। पिछले समय गूगल बॉय के रुप में चर्चित होने वाला बालक इन्हीं गुरुकुलों की देन है। गुजरात के कर्णावती में हेमचंद्राचार्य गुरुकुल में ऐसे नन्हे प्रतिभाशाली छात्रों को देखकर विदेशी भी चकित हैं। हमारे देश को वास्तव में गुरुकुल आधारित शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है, क्योंकि यही भारत की वास्तविक शिक्षा है और इसी से छात्रों का समग्र विकास हो सकता है।

गुरुकुल में जो अध्यापक होते थे, वह अपने आपको गुरु की भूमिका में लाने के लिए ज्ञान की साधना करते थे। एक ऐसा ज्ञान जो समाज को सार्थक दिशा का बोध करा सके। उस समय वर्तमान की तरह स्कूल नहीं होते थे। क्योंकि स्कूलों की प्रणाली विदेशी प्रणाली है। इससे गुरु और शिष्य के मध्य अपनत्व नहीं होता। गुरुकुल का अर्थ स्पष्ट है। वह गुरू का कुल यानी परिवार होता था। गुरु अपने शिष्य को अपने परिवार का सदस्य मानकर ही शिक्षा देता था। संस्कृत में गुरु शब्द का अर्थ ही अंधकार को समाप्त करने वाला होता है। आज के स्कूल एक प्रकार के व्यापार केन्द्र ही हैं। पैसे को आधार मानकर शिक्षा देने का चलन हो गया है। इससे गुरु और शिष्य के बीच गुरुकुल जैसे संबंध नहीं बनते, क्योंकि इन स्कूलों में नैतिक व्यवहार की सीख नहीं दी जाती। शिष्य को ज्ञान नहीं, केवल शब्द पढ़ाए जाते हैं।

शिक्षा प्रणाली का किसी भी देश के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होता है। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद जिस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए थी, उसका हमारे देश में नितांत अभाव महसूस किया जाता रहा है। शायद, स्वतंत्रता मिलने के बाद हमारे नीति निर्धारकों ने शिक्षा नीति बनाने के बारे में कम चिन्तन किया। इसी कारण आज की नई पीढ़ी को इतिहास की जानकारी देने से वंचित किया जा रहा है। यहां यह बताना आवश्यक है कि इतिहास कोई सौ या दो सौ सालों में नहीं बनते। जहां तक भारत के दो सौ सालों के इतिहास की बात है तो इस दौरान भारत परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा रहा था। इसलिए स्वाभाविक है कि उस कालखंड का इतिहास हमारा मूल इतिहास नहीं कहा जा सकता। अगर हमें भारत के इतिहास का अध्ययन करना है तो उस कालखंड में जाना होगा, जब भारत पर किसी विदेशी का शासन नहीं था। क्या आज यह इतिहास कोई जानता है, ... बिलकुल नहीं। उसको कोई बताता भी नहीं, क्योंकि उसको बताने से भारत का वही रूप सामने आएगा, जो विश्वगुरू भारत का था।

हम जानते हैं कि विश्व के प्रायः सभी देशों में जो शिक्षा प्रदान की जाती है, वह उस देश के मूल भाव को संवर्धित करती हुई दिखाई देती है। इसके अलावा शिक्षा का मूल भी यही होना चाहिए कि उसमें उस देश का मूल संस्कार परिलक्षित हो। हमें पहले यह भी समझना होगा कि शिक्षा किसलिए जरूरी है? क्या केवल साक्षर होने या नौकरी के लिए पढ़ाई की जानी चाहिए अथवा इसके और भी गहरे मायने हैं? विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय वह केंद्र होते हैं, जहां विद्यार्थी को वैचारिक स्तर पर गढ़ने का कार्य किया जाता है। विद्यार्थी को गढ़ने का कार्य केवल गुरू ही कर सकते हैं। भारत के मनीषियों ने गुरु के साथ विद्यार्थी के सानिध्य को समझा और गुरुकुल पद्धति पर बल दिया। पारिवारिक वातावरण से दूर रहने के कारण उसमें आत्मनिर्भरता विकसित होती थी तथा वह संसार की गतिविधियों से अधिक अच्छा ज्ञान प्राप्त करता था। उससे आत्मानुशासन की प्रवृत्ति का भी विकास होता था। महाभारत में गुरुकुल शिक्षा को गृह शिक्षा से अधिक प्रशंसनीय बताया गया है। प्राचीन भारत में शिक्षा पद्धति की सफलता का मुख्य आधार गुरुकुल ही थे जो किसी न किसी महान तपधारी ऋषि की तपोभूमि तथा विद्यार्जन के स्थल थे। गुरुकुल और समाज के मध्य पृथक्करण नहीं था। गुरु का कार्यक्षेत्र केवल गुरुकुल तक ही सीमित नहीं था अपितु उनके तेजोमय ज्ञान का प्रसार राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में था। उनकी विद्वता और उत्तम चरित्र तथा व्यापक मानव सहानुभूति की भावना के कारण उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली होती थी।

नजरिया

जब हनुमान से मांगी गुरु जैसी कृपा: श्रद्धा, साधना और सनातन का आलोक

एक दिन की बात है। किसी मंदिर में एक युवक बैठा था, जीवन के संघर्षों से थका हुआ, उत्तरों की तलाश में डूबा हुआ। उसके हाथ में तुलसीदास कृत हनुमान चालीसा थी। वह पढ़ते-पढ़ते उस एक पंक्ति पर अटक गया—₹जय जय जय हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।₹ कुछ क्षण वह मंत्रमुग्ध-सा देखता रहा। फिर उसने आंखें बंद कर लीं और मन ही मन सोचा—क्या वाकई हनुमान जी से गुरु की तरह कृपा मांगी जा सकती है? क्या वह केवल शक्ति और साहस के देवता नहीं, एक सच्चे गुरु भी हैं?

यही सवाल लेकर वह एक संत के पास पहुँचा और पूछा—"गुरुदेव, यह चौपाई क्या कहती है? क्या हनुमान जी गुरु की भूमिका भी निभाते हैं?" संत मुस्कराए। उन्होंने अपनी आंखें मूंदी और धीरे से कहा—"बेटा, इस चौपाई में केवल शब्द नहीं हैं, एक साधक की पुकार छिपी है। जब कोई भक्त हनुमान जी से कहता है कि 'गुरुदेव की नाईं कृपा करो', तो वह यह नहीं मांग रहा कि मुझे धन दो, सुख दो, या विजय दो... वह यह मांग रहा है कि मुझे वैसा बना दो जैसा एक सच्चा गुरु बनाता है—ज्ञान से परिपूर्ण, अहंकार से रहित, सेवा में समर्पित।"

फिर उन्होंने एक उदाहरण दिया। "सोचो, एक व्यापारी है जिसके पास सब कुछ है—धन, घर, परिवार। लेकिन एक दिन जब उसका बेटा उससे कहता है कि 'पिताजी, मुझे मार्ग दिखाइए', तो वह व्यापारी एक गुरु की तरह सोचता है। वह केवल उत्तर नहीं देता, वह बेटे को सोचने की शक्ति देता है। यही गुरु है। हनुमान जी भी यही करते हैं। वे केवल रक्षक नहीं, मार्गदर्शक भी हैं।" संत ने आगे कहा—"भारत की संस्कृति में गुरु को सबसे ऊंचा स्थान दिया गया है। गुरु का अर्थ है—'गु' यानी अंधकार और 'रु' यानी उसे हटाने वाला। गुरु वह नहीं जो केवल शास्त्र सुनाए, बल्कि वह है जो हमारे भीतर के अज्ञान को मिटा दे, हमें आत्मज्ञान का दीप जला दे। इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा बताया—क्योंकि बिना गुरु के, ईश्वर तक पहुंचा ही नहीं जा सकता।"

"हनुमान जी को जब हम गुरु मानते हैं तो यह केवल श्रद्धा नहीं, एक साधना है। वे बल, बुद्धि और विद्या के प्रतीक हैं। उनका जीवन ही एक गुरु की जीवंत परिभाषा है—सेवा में लीन, भक्ति में समर्पित और ज्ञान में निष्णात। वे राम का नाम सुनते ही पुलकित हो उठते हैं। जो भी उन्हें सच्चे मन से पुकारता है, वे उसकी पीड़ा हर लेते हैं। वे सिखाते हैं कि सच्ची भक्ति सेवा से उत्पन्न होती है, तृष्णा से नहीं।" संत ने एक कथा सुनाई—"भगवान दत्तात्रेय ने अपने जीवन में 24 गुरु बनाए। पेड़, पशु, नदी, अग्नि, आकाश—हर चीज़ से उन्होंने कुछ न कुछ सीखा। इसका अर्थ यह है कि ज्ञान हर जगह है, बस आंखें चाहिए देखने के लिए और मन चाहिए समझने के लिए। जब मन निर्मल होता है, तो स्वयं गुरु आ जाते हैं। एक कहावत है—'जब शिष्य तैयार होता है, तभी गुरु आता है।' इसलिए पहले खुद को तैयार करो। हनुमान जी को गुरु बनाना है तो पहले उनके जैसे सेवाभावी बनो, राम नाम में रमण करने वाले बनो।"

फिर संत ने गहरी सांस लेते हुए कहा—"गुरु व्यक्ति नहीं होता, वह एक विचार होता है। विचार कभी मरते नहीं। कोई गुरु भगवा वस्त्र पहनकर आए या न आए, पर अगर वह तुम्हें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए, तुम्हारे भीतर का सत्य जगा दे—तो वही तुम्हारा गुरु है। संघ ने भी भगवा ध्वज को गुरु माना, क्योंकि वह विचार का प्रतीक है। वह त्याग, बलिदान और प्रेरणा का प्रतीक है। और प्रेरणा ही सबसे बड़ा मार्गदर्शन है।" युवक की आंखों में चमक आ गयी थी। वह अब समझ चुका था कि 'कृपा करहुं गुरुदेव की नाईं' का अर्थ केवल कृपा नहीं, आत्मविकास का आह्वान है। हनुमान जी से वह शक्ति मांगनी है जिससे हम अज्ञानता को छोड़कर जीवन के सार को पकड़ सकें। हम केवल सुनने वाले न रहें, बल्कि जानने, समझने और जीने वाले बन सकें। गुरुपूर्णिमा नजदीक थी। युवक ने निश्चय किया कि इस बार वह केवल पूजा नहीं करेगा, बल्कि अपने जीवन में गुरु-तत्व को जागृत करेगा। उसने हनुमान जी से कहा—"अब से आप मेरे गुरु हैं। मेरी अज्ञानता को हटाइए, मुझे सेवा और सत्य के मार्ग पर चलाइए।"

वह चला गया, लेकिन उसके चेहरे पर अब संतोष था। और संत ने आकाश की ओर देखकर कहा—"जब तक श्रद्धा जीवित है, गुरु कभी दूर नहीं होते। और जब तक गुरु का आदर है, भारत जीवित है। यही सनातन की आत्मा है।"

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई) कार्यकारी संपादकः अरविंद मिश्रा, सहसंपादकः सुजीत मिश्रा (दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

संक्षिप्त समाचार

महावितरण के निजीकरण के खिलाफ ठाणे कांग्रेस का जोरदार विरोध प्रदर्शन, अडानी को लाइसेंस देने पर जताई आपत्ति

ठाणेः महावितरण के निजीकरण के प्रस्ताव और अडानी जैसी निजी कंपनियों के बिजली वितरण क्षेत्र में प्रवेश के खिलाफ ठाणे कांग्रेस ने महावितरण मुख्यालय के सामने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इस आंदोलन में ठाणे, नवी मुंबई, पनवेल जैसे क्षेत्रों में बिजली सेवाएं निजी हाथों में दिए जाने की योजना को जनविरोधी बताते हुए नारेबाजी की गई। कांग्रेस अध्यक्ष विक्रांत चव्हाण के नेतृत्व में आयोजित इस प्रदर्शन में "अडानी हटाओ, देश बचाओ" जैसे नारों के साथ स्मार्ट मीटर और प्रीपेड मीटर लगाने के विरोध में भी नागरिकों ने आवाज बुलंद की।

प्रदर्शन के दौरान महावितरण के अधीक्षण अभियंता मेश्राम को ज्ञापन सौंपा गया, जिसमें मांग की गई कि:

- अडानी इलेक्ट्रिकल को वितरण लाइसेंस न दिया जाए
- राज्य सरकार बिजली कंपनी के निजीकरण की नीति रद्द करे
- स्मार्ट और प्रीपेड मीटर लागू न किए जाएं

विक्रांत चव्हाण ने स्पष्ट किया कि ₹बिजली जनता का अधिकार है और महावितरण एक सरकारी संस्था होने के कारण जनता के नियंत्रण में है, लेकिन निजीकरण के बाद यह आम लोगों की पहुँच से बाहर हो जाएगी। यह कदम केवल कुछ औद्योगिक घरानों को लाभ पहुंचाने के लिए उठाया जा रहा है। इस विरोध प्रदर्शन को राष्ट्रवादी कांग्रेस (शरद पवार गुट) की महिला अध्यक्ष सुजाता घाग, सामाजिक संगठनों, और स्थानीय नागरिकों का समर्थन मिला। कांग्रेस प्रवक्ता राहुल पिंगले, सैकड़ों कार्यकर्ता और पदाधिकारी इस विरोध में शामिल हुए और जनता विरोधी नीति के खिलाफ एकजुटता दिखाई।

भिवंडी में अनधिकृत गोदामों पर होगी सख्त कार्रवाई; मुख्यमंत्री फडणवीस के निर्देश

भिवंडीः अनधिकृत गोदामों और उनमें रखे खतरनाक केमिकल के कारण बार-बार हो रही आगजनी की घटनाओं को लेकर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने सख्त रुख अपनाया है। विधान परिषद में विधायक निरंजन डावखरे द्वारा उठाए गए सवाल पर मुख्यमंत्री ने एमएमआरडीए को हवाई सर्वेक्षण कर निरीक्षण के निर्देश दिए हैं, साथ ही जिन ग्राम पंचायतों ने अनधिकृत अनुमति दी है, उनके सरपंचों और अधिकारियों पर कार्रवाई की चेतावनी दी है। 1980 के दशक में शुरू हुआ गोदाम व्यवसाय आज भिवंडी को लॉजिस्टिक्स हब बना चुका है, लेकिन इसी के साथ अनियंत्रित और अनधिकृत निर्माण ने क्षेत्र को संकट में डाल दिया है। अनुमानित 50,000 से अधिक गोदामों में से सैकड़ों गोदाम केमिकल से भरे हैं, जो बस्तियों के बीच संचालित हो रहे हैं। एमएमआरडीए और राजस्व विभाग की ढिलाई, पुलिस प्रशासन की मिलीभगत और राजनीतिक संरक्षण ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है।

कई बार गोदामों को सील किया गया, लेकिन राजनीतिक दबाव में कार्रवाई रोक दी गई। आग बुझाने की व्यवस्था की कमी और ट्रैफिक जाम जैसी समस्याएं आम हो चुकी हैं। अब जब मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक रूप से कार्रवाई के संकेत दिए हैं, सवाल उठता है कि क्या यह कार्रवाई केवल बयानबाजी तक सीमित रहेगी या वास्तव में अनधिकृत निर्माण और केमिकल माफिया पर शिकंजा कसेगा?

भिवंडी मनपा मुख्यालय के पास अवैध पार्किंग पर ट्रैफिक पुलिस की सख्त कार्रवाई, 20 वाहनों पर लगा ऑनलाइन जुर्माना

भिवंडीः भिवंडी महानगरपालिका मुख्यालय के पास सड़क किनारे अवैध पार्किंग करने वाले वाहन चालकों पर ट्रैफिक पुलिस ने सख्त रवैया अपनाते हुए 15 से 20 दोपहिया व चौपहिया वाहनों पर ऑनलाइन जुर्माना ठोका। इस अचानक हुई कार्रवाई से वाहन चालकों में हड़कंप मच गया।

मनपा अधिकारियों के अनुसार, मुख्यालय की चारदीवारी के पास पिछले कुछ समय से वाहन अवैध रूप से पार्क किए जा रहे थे, जिससे न सिर्फ ट्रैफिक जाम की समस्या हो रही थी, बल्कि भवन की सुरक्षा पर भी सवाल उठ रहे थे। पूर्व में वाहन चालकों को चेतावनी दी गई थी, लेकिन इसके बावजूद अवैध पार्किंग जारी रही।

शिकायत मिलने पर ट्रैफिक विभाग ने मौके पर पहुंचकर ऑनलाइन चालान जारी कर दंडात्मक कार्रवाई की। पुलिस की सख्ती से जहां अनुशासनहीन चालकों को सबक मिला, वहीं परिसर में यातायात की व्यवस्था भी कुछ हद तक सुचारू हुई।

एडवोकेट चंद्रजीत यादव बने 'अपना पूर्वांचल महासंघ' प्रयागराज जिला प्रभारी

संगठन विस्तार, जनजागरूकता और सामाजिक सेवा कार्यों को देंगे गति

प्रयागराजः सामाजिक सरोकारों में सक्रिय भूमिका निभा रहे एडवोकेट चंद्रजीत यादव को अपना पूर्वांचल महासंघ की ओर से प्रयागराज जिले का प्रभारी नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट अशोक दुबे के निर्देश पर राष्ट्रीय महासचिव फूलचंद दीक्षित द्वारा जारी आदेश के तहत की गई है।

जारी नियुक्ति पत्र के अनुसार एड. यादव को जिले में संगठन का प्रतिनिधित्व करने और सामाजिक विकास से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता देने की जिम्मेदारी दी गई है। इनमें शिक्षा, रोजगार, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाएं और शासकीय योजनाओं की जानकारी को आमजन तक पहुँचाना प्रमुख रहेगा।

महासंघ के अध्यक्ष एड. अशोक दुबे ने कहा कि चंद्रजीत यादव जैसे ज़मीनी कार्यकर्ता संगठन को नई ऊर्जा देंगे और प्रयागराज जैसे बड़े जिले में संगठन की पहुँच मजबूत करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि एड. यादव को संयोजक और सह-संयोजकों की नियुक्ति और संगठन के संरचना निर्माण की भी जिम्मेदारी दी गई है।

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाएं, सरकारी

योजनाओं की भागीदारी और स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में संगठन पूरी गंभीरता से कार्य कर रहा है। यही कारण है कि कर्मठ और समाजसेवी कार्यकर्ताओं को नेतृत्व में लाया जा रहा है।

इस अवसर पर महासंघ के संरक्षक कृपाशंकर सिंह, राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर अम्ब्रिश दुबे और उत्तर प्रदेश अध्यक्ष आनंद सावरण ने एड. चंद्रजीत यादव को बधाई देते हुए कहा कि यह निर्णय पूर्वांचल के विकास को नई दिशा देगा। उन्होंने कहा कि संगठन युवाओं को प्रशिक्षण, महिलाओं को सशक्तिकरण और योजनाओं की पारदर्शिता जैसे विषयों पर कार्य कर रहा है।

एड. चंद्रजीत यादव ने अपनी नियुक्ति पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे संगठन की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का हरसंभव प्रयास करेंगे और समाज के हर वर्ग तक संगठन के उद्देश्य और योजनाएं पहुँचाकर सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

संगठन ने संकेत दिया है कि आने वाले समय में प्रयागराज जिले में जनजागरूकता अभियान, रोजगार सहायता शिविर और सरकारी योजनाओं से संबंधित कैम्पों का आयोजन भी प्रारंभ किया जाएगा।

एक्सपायरी दवाओं के लिए 'ग्रीन ड्रॉप बॉक्स' पहल की शुरुआत

कल्याण से राज्यव्यापी टेकबैक प्रोग्राम का शुभारंभ, औषध विक्रेताओं की अनोखी पर्यावरण पहल

कल्याणः पर्यावरण बचाओ, दवाओं का दुरुपयोग रोको इस संकल्पना को मूर्त रूप देते हुए महाराष्ट्र राज्य औषध विक्रेता संघटना ने एक अभिनव व लोकहितकारी उपक्रम की शुरुआत की है। राज्य में एक्सपायरी, शेष और अनुपयोगी दवाओं के सुरक्षित संकलन एवं वैज्ञानिक पद्धति से निपटान के लिए ₹टेकबैक प्रोग्राम₹ शुरू किया गया है, जिसका उद्घाटन कल्याण शहर में संघटना के अध्यक्ष व अखिल भारतीय औषध विक्रेता संघ के प्रमुख जगन्नाथ अप्पा शिंदे के हाथों संपन्न हुआ। इस अभियान के अंतर्गत राज्यभर के मेडिकल स्टोर्स पर 'ग्रीन ड्रॉप बॉक्स' लगाए जाएंगे, जिनमें नागरिक अपने घरों में पड़ी अनुपयोगी या एक्सपायरी दवाएं जमा कर सकेंगे। यह दवाएं बाद में बायोमेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट टीम की निगरानी में सुरक्षित रूप से नष्ट की जाएंगी, जिससे पर्यावरण प्रदूषण और मानव स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकेगा।

शिंदे ने जानकारी दी कि यह उपक्रम केंद्र सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन सेंट्रल ड्रग स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (CDSCO) द्वारा मई 2025 में जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप अमल में लाया गया है। इस परियोजना की पायलट शुरुआत अक्टूबर 2024 में कोल्हापुर एवं पश्चिम महाराष्ट्र से हुई थी, जिसे अब राज्यव्यापी स्तर पर विस्तार दिया जा रहा है।

ठाणे जिला, जहां करीब 5000 मेडिकल स्टोर्स कार्यरत हैं, इस योजना का अगला महत्वपूर्ण केंद्र रहेगा। वहीं कल्याण शहर की लगभग 800 मेडिकल दुकानों में भी यह सुविधा लागू कर दी गई है। जगन्नाथ शिंदे ने चिंता जताई कि बहुत से लोग अब भी एक्सपायरी दवाएं कचरे में या खुले स्थानों पर फेंकते हैं, जिससे जलप्रदूषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य को गंभीर खतरे पैदा होते हैं। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे इन दवाओं को नजदीकी मेडिकल स्टोर के ग्रीन ड्रॉप बॉक्स में डालें, जिससे पर्यावरण सुरक्षा और समाज हित में योगदान दिया जा सके।

गुरुपौर्णिमा जैसे पावन दिन इस सामाजिक उपक्रम की शुरुआत को शिंदे ने नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक बताया।

इस अवसर पर ठाणे जिला औषध विक्रेता संघटना के अध्यक्ष देशमुख, सचिव और अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। साथ ही, औषध उपयोग और उपभोग पर जागरूकता फैलानेवाली लेखिका व शिक्षिका प्रा. मंजिरी घरत ने भी अपने विचार साझा किए।

यह उपक्रम न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल है, बल्कि नागरिकों में औषध सुरक्षा और जिम्मेदार उपभोग को लेकर जागरूकता फैलाने का एक सशक्त माध्यम भी बन रहा है।

आनंद विश्व गुरुकुल एवं कनिष्ठ महाविद्यालय में संगीतमय गुरुपूर्णिमा समारोह संपन्न

गुरु-शिष्य परंपरा को समर्पित भावपूर्ण आयोजन, अभंग गायन और विद्यार्थियों की सहभागिता ने कार्यक्रम में भरा रंग

मुंबईः शारदा एजुकेशन सोसाइटी के अंतर्गत संचालित आनंद विश्व गुरुकुल एवं कनिष्ठ महाविद्यालय में गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर एक सांगीतिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य गुरु-शिष्य परंपरा को सम्मान देना और संस्थान के शिक्षण एवं गैर-शिक्षण स्टाफ को समर्पण के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारंभ व्यास प्रतिमा की पूजा और दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसमें संस्थान के गणमान्य अतिथि और शिक्षकों ने भाग लिया। शारदा एजुकेशन सोसाइटी के कोषाध्यक्ष अक्षर पारसनीस ने सभी को गुरुपूर्णिमा की शुभकामनाएं दीं।

महाविद्यालय की प्राचार्या संपदा कुलकर्णी ने अपने प्रेरणादायक संदेश में गुरुओं की भूमिका पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों से उनके प्रति आदरभाव बनाए रखने की अपील की।

कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रहीं प्राध्यापक फाल्गुनी नाटू, जिन्होंने अपनी मधुर वाणी में अभंग प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। उन्हें प्रो. रविराज ने संगीतमय बैंड के साथ सहयोग दिया। कार्यक्रम में गुरु वंदना के साथ आरंभ हुई प्रस्तुति में विद्यार्थियों ने भी जोश से भाग लिया।

इस अवसर पर संस्था की सदस्य एवं ज्येष्ठ रात्रि महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. हर्षला लिखे विशेष रूप से उपस्थित रहीं। विद्यार्थियों ने उप-प्राचार्या दीपिका तलाठी, पर्यवेक्षक प्रो. सागर जाधव सहित सभी शिक्षकों को सादर श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्ट क्लब के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने कला के माध्यम से गुरुपूर्णिमा के महत्व को दर्शाया और अपने गुरुजनों के प्रति सम्मान व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन भावपूर्ण 'पसायदान' के साथ हुआ, जिसने पूरे माहौल को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान की।

यह आयोजन न केवल शिक्षकों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का माध्यम बना, बल्कि विद्यार्थियों में भारतीय परंपराओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की भावना भी जाग्रत हुई।

छह साल बाद लौट रही है ठाणे मनपा कप मैराथन, 10 अगस्त को होगी 31वीं वार्षिक दौड़, 25 हजार धावकों के भाग लेने की संभावना

ठाणेः छह वर्षों के लंबे अंतराल के बाद ठाणे महानगरपालिका कप 31वीं वार्षिक मैराथन का आयोजन आगामी 10 अगस्त (रविवार) को किया जाएगा। इस बात की घोषणा मनपा आयुक्त सौरभ राव ने गुरुवार को की। उन्होंने कहा कि यह प्रतिष्ठित मैराथन प्रतियोगिता 2019 के बाद पहली बार हो रही है, जिससे ठाणेकर नागरिकों सहित देश-विदेश के धावकों में खासा उत्साह है। आयुक्त राव ने सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ इस आयोजन को सफल बनाने का निर्देश दिया और कहा कि शहर के बदले हुए बुनियादी ढांचे को ध्यान में रखते हुए मैराथन मार्गों की नई योजना बनाई जानी चाहिए। पुरस्कार राशि 10,38,900 निर्धारित की गई है और हर समूह के पहले 10 विजेताओं को पुरस्कार और ट्रॉफी प्रदान की जाएगी।

कुल 12 दौड़ समूह बनाए गए हैं, जिनमें राज्य स्तरीय (21 किमी, 10 किमी, 5 किमी), जिला स्तरीय (3 किमी, 5 किमी, 500 मीटर) और कॉर्पोरेट समूह (1 किमी – पूर्व पदाधिकारी व अधिकारी) शामिल हैं। वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी विशेष 500 मीटर की दौड़ रखी गई है।

2019 में 23,000 धावकों ने भाग लिया था, जबकि इस वर्ष लगभग 25,000 धावकों के शामिल होने की संभावना जताई गई है। मैराथन की रूपरेखा और आयोजन की विस्तृत जानकारी खेल विभाग द्वारा आयुक्त राव को दी गई, जिसमें उपायुक्त मीनल पलांडे, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रसाद पाटिल, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रानी शिंदे, इंजीनियरिंग व प्रशासनिक विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। यह मैराथन प्रतियोगिता न केवल खेल भावना को बढ़ावा देने का माध्यम है, बल्कि ठाणे शहर की सक्रियता, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक सहभागिता का प्रतीक भी है।

बीकेसी-शीलफाटा बुलेट ट्रेन सुरंग परियोजना में पहला ब्रेकथ्रू, 2.7 किमी खंड तैयार

ठाणेः मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के तहत बीकेसी से शीलफाटा के बीच बनाई जा रही 21 किमी लंबी सुरंग के निर्माण कार्य में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। 9 जुलाई को परियोजना में पहला ब्रेकथ्रू प्राप्त हुआ, जिसमें 2.7 किमी निरंतर सुरंग का निर्माण सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस सुरंग का 5 किमी हिस्सा शीलफाटा-घनसोली के बीच न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (NATM) से और शेष 16 किमी हिस्सा टनल बोरिंग मशीन (TBM) तकनीक से बनाया जा रहा है। इसमें 7 किमी की समुद्र के नीचे की सुरंग भी शामिल है जो ठाणे क्रीक के नीचे से गुजरेगी।

NATM खंड में काम तेज करने के लिए एक अतिरिक्त मध्यवर्ती सुरंग (ADIT) बनाई गई है, जिससे दोनों ओर से खुदाई संभव हो सकी। अब तक शीलफाटा की ओर से 1.62 किमी और कुल मिलाकर 4.3 किमी की खुदाई पूरी की जा चुकी है।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से साइट पर ग्राउंड सेटलमेंट मार्कर, पीजोमीटर, इनक्लिनोमीटर, स्ट्रेन गेज और बायोमेट्रिक एक्सेस सिस्टम जैसी तकनीकें तैनात की गई हैं, ताकि आसपास की संरचनाओं को नुकसान पहुंचाए बिना सुरक्षित निर्माण सुनिश्चित किया जा सके।

तुर्भे ट्रक टर्मिनल के अवैध गोदामों पर चला मनपा का बुलडोज़र

आग की घटना के बाद 20 अवैध ढांचों को गिराया गया, 1.90 लाख का जुर्माना वसूला

नवी मुंबई, 8 जुलाई 2025: तुर्भे स्थित सिडको ट्रक टर्मिनल में रविवार रात लगी भीषण आग के बाद, नवी मुंबई महानगरपालिका ने सख्त कार्रवाई करते हुए सोमवार को 20 अवैध गोदामों, गैराजों और होटल शेडों को ध्वस्त कर दिया। इस अभियान के तहत 1.90 लाख का शुल्क संबंधितों से वसूला गया। मनपा आयुक्त डॉ. कैलास शिंदे और अतिरिक्त आयुक्त डॉ. राहुल गेठे के आदेश पर, अतिक्रमण विभाग के उपायुक्त डॉ. कैलास गायकवाड के मार्गदर्शन में विभागीय अधिकारी सागर मोरे की टीम ने पुलिस सुरक्षा के बीच यह कार्रवाई अंजाम दी।

ट्रक टर्मिनल परिसर की जमीन सिडको द्वारा ट्रकिंग कार्यों के लिए आवंटित की गई थी, लेकिन पिछले दो वर्षों से यहां कोयला, प्लास्टिक क्रेट्स, कागज के बॉक्स और अन्य ज्वलनशील वस्तुओं का अवैध भंडारण किया जा रहा था। बताया गया कि स्थानीय राजनीतिक दबाव के कारण पहले यह कार्रवाई रोकी जा रही थी।

आग की घटना में 8 ट्रक, 1 जेसीबी और 5 गोदाम जलकर खाक हो गए। घटना के तुरंत बाद, अतिरिक्त आयुक्त डॉ. गेठे ने संबंधित विभाग को अवैध ढांचों पर त्वरित कार्रवाई के निर्देश दिए।

मनपा सूत्रों के अनुसार, सिडको की एक और जमीन पर भी जल्द ही प्लास्टिक क्रेट्स के अवैध भंडारण पर कार्रवाई की जाएगी।

परोपकार संस्था द्वारा ठाणे ट्रैफिक पुलिस को रेनकोट वितरित, बरसात में ड्यूटी को सलाम

ठाणेः परोपकार ठाणे क्षेत्रीय समिति ने सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचय देते हुए ठाणे ट्रैफिक पुलिस कर्मियों को रेनकोट वितरित किए। यह वितरण ट्रैफिक पुलिस निरीक्षक गौरी मोरे की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर समिति के प्रमुख ओमप्रकाश अग्रवाल, संजय चूड़ीवाला, कैलाश झुनझुनवाला, राजीव अग्रवाल, चंद्रप्रकाश सराफ, पंकज जैन सहित पुलिसकर्मी अभिजीत भट, सचिन भोसले और उनकी टीम मौजूद थी।

ओमप्रकाश अग्रवाल ने बताया कि संस्था हर वर्ष बरसात के मौसम में ट्रैफिक पुलिस को रेनकोट वितरित करती है, ताकि ड्यूटी के दौरान उन्हें बारिश से सुरक्षा मिल सके। उन्होंने कहा, ₹भारी बारिश में खुले आसमान के नीचे खड़े होकर ट्रैफिक कंट्रोल करना आसान नहीं होता। ऐसे में यह छोटा सा सहयोग उनकी सेवा भावना के प्रति सम्मान का प्रतीक है।₹

यह पहल न केवल सड़क सुरक्षा में लगे कर्मचारियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है, बल्कि नागरिकों को भी प्रेरित करती है कि वे समाज की सेवा में जुटे कर्मवीरों का सम्मान करें।

मनपा आयुक्त अनमोल सागर ने स्कूलों का निरीक्षण कर दिए सुधार के निर्देश

भिवंडीः मनपा आयुक्त अनमोल सागर ने गुरुवार को नारळी तलाव और शांतिनगर स्थित भिवंडी मनपा स्कूलों का दौरा किया। उनके साथ उपायुक्त बालकृष्ण क्षीरसागर और प्रशासनाधिकारी सौदागर शिखरे भी मौजूद थे। दौरे के दौरान आयुक्त ने स्कूलों की इमारतों, शौचालयों, बिजली आपूर्ति और स्वच्छता की स्थिति का जायजा लिया और संबंधित विभागों को तुरंत सुधारात्मक कार्रवाई के निर्देश दिए।

उन्होंने स्कूल सुरक्षा और सुविधाओं को लेकर सभी प्रधानाध्यापकों की एक संयुक्त समिति बनाने का सुझाव दिया, जो नियमित रूप से फॉलो-अप करेगी। आयुक्त ने छात्रों की संख्या, शिक्षकों की उपस्थिति और स्कूल रिकॉर्ड का भी निरीक्षण किया। उन्होंने शिक्षकों को डिजिटल क्लासरूम का अधिकतम उपयोग करने का निर्देश देते हुए विषयवार समय-सारणी तैयार करने को कहा। साथ ही प्रभाग अधिकारियों को स्कूल परिसर की साफ-सफाई नियमित रखने के स्पष्ट निर्देश भी दिए।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail.com

04 मुंबई, शुक्रवार, 11 जुलाई 2025 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

अनुकूल भारत गैस वितरक के खिलाफ FIR, अवैध गैस गोदाम पर कार्रवाई डीसीपी विजयकांत सागर की सख्त पहल

शिवड़ी पुलिस पर मिलीभगत के आरोप

मुंबईः मुंबई के शिवड़ी ग्रांट डिपो क्षेत्र में अनुकूल भारत गैस वितरक द्वारा संचालित अवैध गैस सिलेंडर गोदाम पर आखिरकार पुलिस ने FIR दर्ज कर कार्रवाई शुरू की है, लेकिन इस कार्रवाई में भी कई सवाल उठ रहे हैं। डीसीपी विजयकांत सागर के आदेश पर हुई इस पहल में जहां एक ओर वर्षों से फल-फूल रहे IPG गोडाउन पर शिकंजा कसा गया, वहीं शिवड़ी पुलिस की FIR में आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 को शामिल न करना दिखावटी कार्यवाही को उजागर कर रहा है।

स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, यह अवैध गैस कारोबार राशनिंग विभाग की शह पर चल रहा था। अनुकूल भारत गैस वितरक ने न तो किसी सुरक्षा मानक का पालन किया, न ही प्रशासन से कोई लाइसेंस लिया। भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL) के अधिकारियों पर आरोप है कि वे इस एजेंसी को संरक्षण देते हुए कम दर पर गैस आपूर्ति की अनुमति देते रहे हैं।

ज्ञात हो कि देशभर में गैस सिलेंडरों से जुड़ी दुर्घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। हाल ही में धारावी बस डिपो के पास अवैध सिलेंडरों से भरे वाहन में विस्फोट से भारी नुकसान हुआ था, लेकिन प्रशासन ने इस पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया। शिवड़ी में बना यह अवैध ट्रक गोदाम मुंबई के ईस्टर्न फ्रीवे, अटल सेतु और अन्य मुख्य सड़कों के समीप है, जिससे संभावित विस्फोट की स्थिति में हजारों यात्रियों की जान खतरे में पड़ सकती है। यह क्षेत्र घनी आबादी और हाई ट्रैफिक वाला है, जहां सुरक्षा मानकों की अनदेखी गंभीर चिंता का विषय है।

केंद्र सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार एलपीजी डिस्ट्रीब्यूशन में PESO अधिनियम, पेट्रोलियम अधिनियम 1934, आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 तथा महाराष्ट्र अग्निनिवारण और जीवन सुरक्षा अधिनियम 2006 जैसे नियमों का पालन अनिवार्य है। लेकिन अनुकूल भारत गैस वितरक इन सभी नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ा रहा था। स्थानीय नागरिकों ने इस बात पर भी नाराज़गी जताई है कि शिवड़ी पुलिस स्टेशन द्वारा दर्ज की गई FIR में गंभीर धाराओं को जानबूझकर शामिल नहीं किया गया, जिससे यह पूरी कार्रवाई संदेह के घेरे में आ गई है। लोगों ने मांग की है कि इस मामले में BPCL अधिकारियों की भूमिका, राशनिंग विभाग की मिलीभगत और स्थानीय पुलिस की निष्क्रियता की सीबीआई या एनआईए स्तर की जांच होनी चाहिए।

मुंबई जैसे शहर में गैस जैसी संवेदनशील वस्तु के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ सिर्फ लापरवाही नहीं, बल्कि एक आपराधिक साजिश है। प्रशासन को अब और देरी किए बिना इस पूरे नेटवर्क को बेनकाब करना होगा।

विधानसभा में भिवंडी के भूस्खलन और आतकोली डंपिंग ग्राउंड का मुद्दा गरमाया, विधायक रईस शेख ने सरकार से की हस्तक्षेप की मांग

भिवंडीः भिवंडी पूर्व से समाजवादी पार्टी के विधायक रईस शेख ने विधानसभा में भिवंडी शहर में हुए भूस्खलन और पालिका की जल्दबाज कार्रवाई, साथ ही आतकोली डंपिंग ग्राउंड के मुद्दे को उठाकर सरकार से न्यायोचित हस्तक्षेप की मांग की।

उन्होंने बताया कि 24 जून को नागांव गायत्रीनगर में भूस्खलन से सात घरों को नुकसान पहुंचा, लेकिन इसके चार दिन बाद पालिका ने अचानक डेढ़ सौ घरों की बिजली-पानी आपूर्ति बंद कर दी, जिससे क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो गई। विधायक ने कहा कि कार्रवाई स्थल और दुर्घटना स्थल अलग-अलग होने के बावजूद पालिका ने बिना सूचना जल्दबाजी में कार्रवाई की, और प्रभावित परिवारों को कोई राहत नहीं दी गई।

विधायक शेख ने यह भी कहा कि मुंबई महानगरपालिका द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों में सुरक्षा दीवारों के लिए निधि दी जाती है, लेकिन भिवंडी जैसे शहरों की अनदेखी की जाती है। उन्होंने पूरे एमएमआर क्षेत्र के लिए एक समान आपदा प्रबंधन नीति लागू करने की मांग रखी।

वहीं आतकोली डंपिंग ग्राउंड के मुद्दे पर उन्होंने बताया कि ठाणे महानगरपालिका द्वारा स्थानीय ग्राम पंचायत की अनुमति और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मंजूरी के बिना रोजाना सैकड़ों टन कचरा डाला जा रहा है। ग्रामीण इसका विरोध कर रहे हैं और सरकारी जमीन के दुरुपयोग पर नाराज़गी जता रहे हैं।

विधायक शेख ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से तत्काल कार्रवाई करने और स्थानीय लोगों को न्याय दिलाने की मांग की।

मुंबई के पूर्व उपमहापौर बाबूभाई भावनजी ने दिया सभी फेरीवालों के आंदोलन को समर्थन, आंदोलन को मिली मजबूती

मुंबईः संयुक्त फेरीवाला संघटना एसोसिएशन द्वारा 15 जुलाई 2025 को मंत्रालय की ओर निकाले जा रहे मूक मोर्चे को अब राजनीतिक और सामाजिक समर्थन भी मिलने लगा है। इसी कड़ी में वरिष्ठ नेता बाबूभाई भावनजी ने सभी फेरीवालों के आंदोलन को खुला समर्थन दिया है।

उन्होंने कहा, फेरीवाले इस शहर की जीवनरेखा हैं। अगर महापालिका और सरकार उनकी रोज़ी-रोटी पर प्रहार करेंगी, तो हम चुप नहीं बैठेंगे। मैं उनके इस शांतिपूर्ण आंदोलन के साथ हूं और प्रशासन से अपील करता हूं कि उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार किया जाए। बाबूभाई का समर्थन मिलते ही आंदोलन को नई ताकत मिली है। फेरीवालों ने भी एकजुट होकर उनका आभार व्यक्त किया है और कहा है कि वे संगठित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई जारी रखेंगे।

बता दें कि 13 जुलाई से फेरीवाले बेमुद्दत धंधा बंद और मूक उपोषण शुरू कर रहे हैं, और 15 जुलाई को मंत्रालय की ओर विशाल मोर्चा निकाला जाएगा। अब देखना यह है कि प्रशासन इस संगठित और व्यापक आंदोलन पर क्या रुख अपनाता है।

'साउथ इंडियन बिगाड़ रहे महाराष्ट्र की संस्कृति' मुंबई में कैंटीन मारपीट मामले में विधायक संजय गायकवाड़ ने फिर दिया विवादित बयान

मुंबई। शिवसेना (शिंदे गुट) के विधायक संजय गायकवाड़ एक बार फिर विवादों के केंद्र में आ गए हैं। मुंबई की आकाशवाणी कैंटीन में एक कर्मचारी को पीटने के मामले के बाद अब उन्होंने दक्षिण भारतीयों के खिलाफ आपत्तिजनक बयान देकर नया विवाद खड़ा कर दिया है। गायकवाड़ ने कहा कि दक्षिण भारतीयों को खाने के ठेके नहीं दिए जाने चाहिए क्योंकि वे डांस बार और लेडीज बार चलाते हैं और महाराष्ट्र की संस्कृति को बिगाड़ते हैं। इंडिया टुडे से बातचीत में संजय गायकवाड़ ने सवाल उठाया कि "शेट्टी नामक ठेकेदार को ठेका क्यों दिया गया?" उन्होंने कहा, "इसे किसी मराठी व्यक्ति को दिया जाना चाहिए जो जानता हो कि महाराष्ट्र के लोग क्या खाते हैं।" उन्होंने आरोप लगाया कि दक्षिण भारतीय न केवल अस्वास्थ्यकर खाना परोसते हैं, बल्कि महाराष्ट्र की संस्कृति को भी नुकसान पहुंचाते हैं।

यह बयान उस समय आया है जब गायकवाड़ के आचरण पर मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस दोनों ही नाराजगी जाहिर कर चुके हैं। सीएम फडणवीस ने विधानसभा अध्यक्ष से इस मामले में कड़ी कार्रवाई की मांग की थी। गायकवाड़ द्वारा कर्मचारी को पीटने का वीडियो वायरल होने के बावजूद उन्होंने माफी नहीं मांगी और खुद को "फाइटर" बताया।

कैंटीन विवाद के बाद एफडीए (खाद्य एवं औषधि प्रशासन) ने कार्रवाई करते हुए कैंटीन ठेकेदार का लाइसेंस निलंबित कर दिया है। विभाग द्वारा की गई जांच में सामने आया कि कैंटीन में अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में खाना पकाया जा रहा था। इस बीच, कैंटीन का मैनेजर और ठेका भी रद्द किया गया है। यह कोई पहली बार नहीं है जब संजय गायकवाड़ विवादों में आए हों। इससे पहले वे राहुल गांधी की जीभ काटने वाले को ईनाम देने की घोषणा कर चुके हैं। इसके अलावा अपनी गाड़ी सुरक्षा कर्मियों से धुलवाने जैसे आरोपों में भी उनका नाम आया था।

जसलोक हॉस्पिटल में नेतृत्व परिवर्तनः विनोद पी. चनराय नए चेयरमैन नियुक्त

मुंबईः जसलोक हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में नेतृत्व बदलाव के तहत विनोद पी. चनराय को नया चेयरमैन नियुक्त किया गया है। अब तक इस पद पर रहीं श्रीमती कांता मसंद को मानद चेयरपर्सन एमेरिटस की उपाधि दी गई है।

श्रीमती मसंद के नेतृत्व में जसलोक हॉस्पिटल ने कोविड-19, वैक्सीनेशन, और सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए। वहीं, श्री चनराय अपने तकनीकी, नवाचार और गवर्नेंस के अनुभव के साथ अब संस्थान को नई दिशा देंगे।

अपने संदेश में चनराय ने कहा कि उनका लक्ष्य तकनीक, करुणा और नवाचार के माध्यम से जसलोक को भविष्य के लिए तैयार करना है। हॉस्पिटल के सीईओ जितेंद्र हरयान ने इस बदलाव को जसलोक 2.0 की शुरुआत बताया।

'गद्दार' टिप्पणी पर अनिल परब और शंभूराज देसाई के बीच तीखी नोकझोंक

मुंबई। महाराष्ट्र विधान परिषद में गुरुवार को उस समय माहौल गर्मा गया, जब शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के नेता अनिल परब और शिंदे गुट के मंत्री शंभूराज देसाई के बीच तीखी बहस हो गई। बहस की वजह बनी ₹गद्दार₹ शब्द, जो परब ने देसाई पर टिप्पणी करते हुए उपयोग किया।

दरअसल, विधान परिषद में मराठी भाषी लोगों के लिए आवास सुनिश्चित करने के कानूनी प्रावधानों को लेकर चर्चा चल रही थी। इस दौरान बीजेपी की एमएलसी चित्रा वाघ ने सवाल किया कि क्या महा विकास आघाड़ी (MVA) सरकार ने इस दिशा में कोई कदम उठाया था।

इस पर मंत्री शंभूराज देसाई ने जवाब दिया कि पूर्ववर्ती सरकार

(उद्धव ठाकरे नेतृत्व वाली MVA सरकार) ने कोई ठोस क़ानूनी पहल नहीं की थी।

देसाई के इस जवाब के बाद अनिल परब भड़क गए और उन्होंने देसाई को ₹गद्दार₹ कह दिया। देसाई ने मीडिया से बातचीत में कहा कि मैंने केवल उद्धव ठाकरे सरकार का ज़िक्र किया था, जिसका मैं भी हिस्सा था। परब ने मुझे गद्दार कह दिया, तो मैंने भी उसी भाषा में जवाब दिया।

शंभूराज देसाई ने यह भी आरोप लगाया कि अनिल परब ने उन्हें सदन के बाहर निपटने की धमकी दी। उन्होंने कहा कि मैंने चुनौती दी कि मैं बाहर भी सामना करने को तैयार हूं। विवाद बढ़ता देख उपसभापति नीलम गोर्हे ने सदन की कार्यवाही कुछ समय के लिए स्थगित कर दी और दोनों नेताओं को अपने कक्ष में बुलाकर चर्चा की।

नीलम गोर्हे ने आश्वस्त किया कि सदन की कार्यवाही से 'गद्दार' जैसी अनुचित टिप्पणी हटाई जाएगी। इसके बाद सदन का कामकाज दोबारा शुरू हुआ। यह पहली बार नहीं है जब 'गद्दार' शब्द को लेकर विवाद हुआ हो। शिवसेना के विभाजन (जून 2022) के बाद से उद्धव ठाकरे अक्सर एकनाथ शिंदे और उनके साथ गए विधायकों को 'गद्दार' कहकर निशाना बनाते रहे हैं। अब यही आरोप सदन की गरिमा को प्रभावित कर रहे हैं।

कर्नाक पुल का 'सिंदूर' नामकरण कर इतिहास के काले अध्याय को मिटाया गया : देवेंद्र फडणवीस

मुंबईः लगभग डेढ़ शताब्दी से 'कर्नाक ब्रिज' के नाम से विख्यात इस ऐतिहासिक पुल का नाम बदलकर अब 'सिंदूर पुल' रखा गया है। इसका भव्य उद्घाटन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के हाथों आज संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि 'कर्नाक' नाम उस ब्रिटिश गवर्नर से जुड़ा था जिसने भारतीयों पर अन्याय और अत्याचार किए। इसलिए इस पुल का नाम बदलकर 'सिंदूर' रखा गया है ताकि इतिहास के काले अध्याय को मिटाया जा सके। मशीद बंदर रेलवे स्टेशन के पास पी. डी' मेलो मार्ग से जुड़ने वाले इस नए सिंदूर रेलवे ओवरब्रिज का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री फडणवीस ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव' के अवसर पर इतिहास के काले अध्यायों को समाप्त करने का आह्वान किया गया था, और इसी के अनुरूप इस पुल का नामकरण किया गया है। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि ₹पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान में घुसकर आतंकी ठिकानों को नष्ट किया था, जो भारत की सैन्य शक्ति का प्रतीक है। इस शौर्य को सम्मानित करने के लिए मनपा ने इस पुल को 'सिंदूर' नाम दिया है, जो मेरे लिए गर्व की बात है।' 342 मीटर लंबे इस पुल में से लगभग 70 मीटर हिस्सा रेलवे क्षेत्र में आता है और यह मुंबई की यातायात व्यवस्था को काफी हद तक राहत देने वाला है। मुख्यमंत्री ने पुल के चुनौतीपूर्ण निर्माण कार्य को उच्च गुणवत्ता के साथ कम समय में पूरा करने के लिए मुंबई महानगरपालिका की टीम की सराहना की। उन्होंने घोषणा की कि यह पुल दोपहर 3:00 बजे से वाहनों के लिए खोल दिया जाएगा।

सहस्त्र कमल पुष्पों से हुआ दिव्य वैदिक पुष्पार्चन, मंत्रोच्चार से गूंजा नोएडा

राष्ट्रीय स्वाभिमान। रणजीत कुमार

नोएडा। नोएडा स्थित फार्च्यून इन ग्राज़िआ सभागार में आर्यम इंटरनेशनल फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'आर्यम गुरु पूर्णिमा महोत्सव 2025' भव्य और दिव्य रूप से संपन्न हुआ। यह आयोजन परम पूज्य जगद्गुरु प्रो. पुष्पेंद्र कुमार आर्यम जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें देश-विदेश से आए 325 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस पावन अवसर पर 44 श्रद्धालुओं को नव दीक्षा, 64 को मंत्र दीक्षा तथा 180 को शक्तिपात दीक्षा गुरुदेव द्वारा प्रदान की गई।

महोत्सव का शुभारंभ सहस्त्रार कमल पुष्पों एवं अन्य पुष्पों से विष्णु सहस्रनाम द्वारा वैदिक पुष्पार्चन के साथ हुआ। वातावरण मंत्रोच्चार, अग्निहोत्र और वैदिक स्तुति से गुंजायमान हो उठा।

गुरुदेव आर्यम जी महाराज ने कहा, "भगवान विष्णु त्रिमूर्ति में पालनकर्ता हैं और गुरु भी शिष्यों के जीवन में वही भूमिका निभाते हैं – उन्हें संतुलित, सुरक्षित और धर्ममय बनाए रखने की। गुरु केवल विषय विशेष का ज्ञाता नहीं होता, वह समग्र जीवन का मार्गदर्शक होता है। जहां शिक्षा सीमित करती है, वहीं दीक्षा असीम बनाती है।" गुरु पूर्णिमा की महत्ता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि "गुरु शिष्य को केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि जीवन के अज्ञात पक्षों को भी उजागर करता है। इसीलिए महर्षि वेदव्यास के जन्मदिवस को हम गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं।"

ट्रस्ट की प्रवक्ता माँ यामिनी श्री ने बताया कि "पूज्य गुरुदेव के विश्वभर में सर्वाधिक दीक्षित शिष्य हैं, जो अग्निहोत्र, वैदिक पाठ और आध्यात्मिक जीवनशैली को अपनाकर सत्य सनातन धर्म का प्रचार कर रहे हैं।"

इस भव्य आयोजन में राकेश रघुवंशी, संध्या, सुनील आर्य, प्रीतेश आर्यम, हर्षिता आर्यम, श्वेता जायसवाल, शालिनी अरोड़ा, गौरव स्वामी, चंद्रपाल शर्मा, रोहित वेदवान, प्रदीप यादव सहित अनेक सेवकों का सक्रिय सहयोग रहा।

पूरे आयोजन में अनुशासन, वैदिक गरिमा और आध्यात्मिक चेतना का समावेश था, जिसने इसे एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायक महोत्सव बना दिया।

हिंगोली में 14000 महिलाओं में मिले कैंसर के लक्षण राज्य सरकार के विशेष अभियान में सामने आई चिंताजनक तस्वीर, 8 मार्च से शुरू हुआ था सर्वे

मुंबई। महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में एक व्यापक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के दौरान 14,542 महिलाओं में कैंसर जैसे लक्षण पाए गए हैं, जिससे स्वास्थ्य महकमे में चिंता की लहर दौड़ गई है। गुरुवार को महाराष्ट्र विधानसभा में यह जानकारी राज्य के स्वास्थ्य मंत्री प्रकाश आबितकर ने साझा की। यह सर्वे महिला दिवस (8 मार्च) से शुरू होकर राज्य सरकार की 'संजीवनी स्कीम' के तहत संचालित किया गया था।

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि मराठवाड़ा क्षेत्र के इस जिले में 2,92,996 महिलाओं की स्क्रीनिंग की गई थी। इनमें से 14,542 महिलाएं कैंसर की संदिग्ध मरीजों के रूप में सामने आईं। इस दौरान तीन महिलाओं में गर्भाशय का कैंसर, एक महिला में स्तन कैंसर और आठ महिलाओं में मुंह का कैंसर की पुष्टि हुई है। इससे पहले जिला कलेक्टर अभिनव गोयल ने शुरुआती रिपोर्ट में यह संख्या 13,500 बताई थी।

स्वास्थ्य मंत्री आबितकर ने कहा कि यह अभियान कैंसर के शुरुआती लक्षणों की पहचान और समय पर इलाज सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चलाया गया। इसके जरिए महिलाओं को जागरूक करने और संभावित रोगियों की पहचान कर उन्हें उचित इलाज की ओर अग्रसर करने की रणनीति बनाई गई है।

स्वास्थ्य मंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि फिलहाल महिलाओं के लिए अलग से कोई कैंसर अस्पताल बनाने की योजना नहीं है। हालांकि, उन्होंने बताया कि राज्य के 8 जिला अस्पतालों में डे-केयर कीमोथेरेपी सेंटर शुरू किए गए हैं। इन सेंटरों को राज्य के अन्य जिलों में भी स्थापित किया जाएगा। टाटा मेमोरियल अस्पताल के साथ करार कर महीने में दो बार कैंप लगाने की योजना है। इन कैंपों में विशेषज्ञ टीम कैंसर जांच और प्रशिक्षण का कार्य करेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में स्क्रीनिंग और जागरूकता बढ़ाने के लिए कैंसर योद्धाओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा।